शीर्षक

बढ़ती जनसंख्या का कुप्रभाव (2015 CS, 17 MH)
जनसंख्या वृद्धि : एक अभिशाप (2017 MI)
जनसंख्या वृद्धि : एक समस्या (2015 CQ, 19 CR)
बढ़ती जनसंख्या : समस्या और समाधान (2012 CW, 20 ZF)
जनसंख्या विस्फोट : एक समस्या (2011 GO)
बढ़ती आबादी : समस्या और समाधान (2012 CX, 18 AM)
बढ़ती जनसंख्या का कुप्रभाव (2015 CS)
बढ़ती जनसंख्या और देश का भविष्य (2016 SI)
छोटा परिवार-सुखी परिवार (2015 CR)
जनसंख्या वृद्धि का प्रभाव (2020 ZB)

प्रस्तावना—जिस देश को कभी सोने की चिड़िया कहा जाता था, जहाँ कभी दूध की नदियाँ बहा करती थीं, उसी देश के अधिकांश बच्चों को शायद आज दूध के रंग का भी पता न हो। आज असंख्य लोगों को रहने के लिए घर, तन ढकने के लिए पर्याप्त वस्त्र और खाने के लिए भरपेट भोजन भी नहीं मिल पाता। आखिर क्यों? इसका एकमात्र कारण है—जनसंख्या की अत्यधिक वृद्धि। जनसंख्या की इस अपार वृद्धि के कारण सम्पूर्ण देश की प्रगति अवरुद्ध हो रही है। भारतवर्ष में विश्व की जनसंख्या का छठा भाग निवास करती है। सन् 1981 की जनगणना के अनुसार भारतवर्ष की जनसंख्या 68.38 करोड़ थी; जबकि सन् 1991 की जनगणना के अनुसार यह संख्या बढ़कर 84.39 करोड़ हो गई। मार्च, सन् 2001 तक यह आँकड़ा 1,02,70,15,247 तक पहुँच गई। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की जनसंख्या 1 अरब 21 करोड़ है। यद्यपि जनसंख्या किसी देश अथवा राज्य का प्रमुख तत्त्व है और उसके बिना किसी राज्य एवं जाति की कल्पना भी नहीं की जा सकती; किन्तु 'अति सर्वत्र वर्जयेत्'। जनसंख्या की वृद्धि का यह दानव आज सम्पूर्ण भारतवर्ष के सामने मुँह बाये खड़ा है, क्योंकि जिस गति से भारतवर्ष में जनसंख्या की वृद्धि हो रही है, वह अत्यधिक दुःखदायी है।

भारतवर्ष में जनसंख्या-वृद्धि के कारण—भारतवर्ष में जनसंख्या की अत्यधिक वृद्धि के कुछ विशेष कारण हैं, जिनमें बाल-विवाह, बहु-विवाह, दरिद्रता, मनोरंजन के साधनों का अभाव, गर्म जलवायु, अशिक्षा, रूढ़िवादिता, ग्रामीण क्षेत्रों में सन्तति-निरोध की सुविधाओं का कम प्रचार हो पाना, परिवार-नियोजन के नवीनतम साधनों की अनभिज्ञता एवं पुत्र की अनिवार्यता आदि मुख्य कारण हैं।

जनसंख्या की उत्तरोत्तर वृद्धि से हानि—भारत की वर्तमान आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक समस्याओं का मुख्य कारण बढ़ती हुई जनसंख्या है। 'ऋग्वेद' में कहा गया है—"**जहाँ प्रजा का आधिक्य होगा, वहाँ निश्चय ही**

दुःख एवं कष्ट की मात्रा अधिक होगी।'' यही कारण है कि आज भारत में सर्वत्र अशिक्षा, गरीबी, बेरोजगारी, भुखमरी, निम्न जीवन-स्तर, सामाजिक कलह, अस्वस्थता एवं खाद्यान्न-संकट आदि अनेकानेक समस्याएँ निरन्तर बढ़ रही हैं। निश्चय ही जनसंख्या का यह विस्फोट भारत के लिए अभिशाप है। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री **माल्थस** का विचार है कि ''जनसंख्या की वृद्धि गुणोत्तर गति से होती है, जबकि उत्पादन अंकगणितीय गति से।'' **प्रो० कारसाण्डर्स** का अनुमान है कि ''संसार की जनसंख्या में एक प्रतिशत प्रति वर्ष की गति से वृद्धि हो रही है।'' यदि यह वृद्धि इसी गति से होती रही तो पाँच-सौ वर्ष पश्चात् मनुष्यों को पृथ्वी पर खड़े होने की जगह भी नहीं मिल पाएगी। इसी बात को प्रसिद्ध हास्य कवि **काका हाथरसी** ने अपनी विनोदपूर्ण शैली में इस प्रकार लिखा है—

यदि यही रहा क्रम बच्चों के उत्पादन का,
तो कुछ सवाल आगे आएँगे बड़े-बड़े।
सोने को किंचित जगह धरा पर मिले नहीं,
मजबूरन हम तुम सब सोएँगे खड़े-खड़े।

हमारे देशवासी जनसंख्या की वृद्धि से होने वाली हानियों के प्रति आज भी लापरवाह हैं। इतना ही नहीं, वे सन्तान को ईश्वर की देन मानते हुए उसके जन्म पर नियन्त्रण करना पाप मानते हैं। निश्चित ही जनसंख्या की वृद्धि का यदि यही क्रम रहा तो मानव-जीवन अत्यधिक संघर्षपूर्ण एवं अशान्त हो जाएगा।

परिवार नियोजन की उपयोगिता—संसार के समस्त प्राणी अपने जीवन को सुखी एवं व्यवस्थित बनाना चाहते हैं। ऐसा तभी सम्भव है, जबकि व्यय का अनुपात आय के अनुकूल हो। व्यक्ति व्यय को तो नियन्त्रित कर सकता है, किन्तु आय की सीमाएँ होती हैं। यदि परिवार सीमित है तो व्यक्ति कम आय में भी अपने बच्चों की पढ़ाई-लिखाई पर ध्यान दे सकता है और स्वयं को भी व्यवस्थित रख सकता है। परिवार सीमित रहे, इसके लिए आवश्यक हैं—परिवार नियोजन। बढ़ती हुई जनसंख्या पर नियन्त्रण रखने का सर्वोत्तम साधन ब्रह्मचर्य का पालन है; किन्तु इस भौतिकवादी युग में इसका पूर्णतया पालन सम्भव प्रतीत नहीं होता। नियोजित परिवार के लाभ हमारे देशवासियों से छिपे नहीं हैं। 'छोटा परिवार सुखी परिवार' का सन्देश अब जन-जन का कण्ठहार बन गया है। परिवार नियोजन का चिह्न 'लाल तिकोन' है जो 'स्वास्थ्य, शिक्षा एवं समृद्धि' अथवा 'सुख, शान्ति और विकास' का प्रतीक है। यह चिह्न 'पति, पत्नी एवं बालक' का भी सूचक है। परिवार नियोजन से देश, समाज तथा व्यक्ति तीनों को ही लाभ है। परिवार नियोजन अपनाकर प्रत्येक व्यक्ति अपना जीवन सुख एवं शान्ति से व्यतीत कर सकेगा, उसके रहन-सहन का स्तर ऊँचा हो सकेगा तथा वह अपने आश्रितों की प्रत्येक आवश्यकता की पूर्ति करता हुआ उन्हें अधिक सुखी रख सकेगा। वास्तव में कम बच्चों वाले माता-पिता अपने सभी बच्चों की शिक्षा एवं उनके स्वास्थ्य का समुचित प्रबन्ध अवश्य कर सकते हैं। इस प्रकार देश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने एवं निर्धनता के अभिशाप को दूर करने में परिवार-नियोजन का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

जनसंख्या नियन्त्रण के उपाय—जनसंख्या की वृद्धि को रोकने के लिए कुछ उपाय निम्नलिखित प्रकार के हो सकते हैं—

(1) बाल-विवाह एवं बहु-विवाह जैसी कुप्रथाओं पर रोक लगाई जाए।

(2) परिवार नियोजन कार्यक्रम का व्यापक प्रचार किया जाए।

(3) विवाह की आयु में वृद्धि करके लड़कियों के लिए न्यूनतम आयु 20 वर्ष एवं लड़कों के लिए 25 वर्ष निर्धारित की जाए।

(4) बच्चों की आयु में अन्तर रखने के लिए परिवार नियोजन सम्बन्धी सामग्री अपनाने की प्रेरणा दी जाए।

(5) अधिक बच्चों को जन्म देने वाले माता-पिता को हतोत्साहित किया जाए। इसके लिए उन्हें विभिन्न शासकीय सुविधाओं से वंचित रखा जाए, भले ही वे किसी भी वर्ग के हों।

उपसंहार—आज भारतवर्ष में वे कुप्रथाएँ समाप्त होती जा रही हैं जिनसे जनसंख्या में वृद्धि हो रही थी। बाल-विवाह जैसी कुप्रथा अब लगभग समाप्त हो गई है और शिक्षा का निरन्तर प्रसार हो रहा है। परिणामतः भारतीय जनता परिवार नियोजन के महत्त्व को जानकर जनसंख्या की वृद्धि को रोकने के लिए प्रयासरत है। चिकित्सा-क्षेत्र में नवीन पद्धतियों के आने से, गर्भ निरोध के साधनों के प्रति जनता का भय समाप्त हो गया है। अतः राष्ट्र हित को देखते हुए हमें जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण रखना होगा तभी देश प्रगति के पथ पर अग्रसर होगा।

Gyansindhu Coaching Classes
By Arunesh Sir